संस्कृति मंत्रालय
भारत सरकार
सत्यमेव जयते

सांस्कृतिक स्रोत एवं प्रशिक्षण केन्द्र

(संस्कृति मंत्रालय, भारत सरकार के अंतर्गत एक स्वायत संस्थान)

सीसीआरटी समाचार **CCRT Newsletter**

खण्ड 1 • अंक 4 • नवम्बर 2023 Volume 1 • Issue 4 • November, 2023

कला मंथन

कला सृजन का कार्य कई सदियों से चल रहा है। कला विचार का भी कार्य कला सृजन के साथ चल रहा है। कलाकृति से संबंधित सामान्य कथनों के आधार पर कला धारणाएं बनती हैं। इन्हीं धारणाओं के कारण योजनापूर्वक विचार प्रकट होते हैं, परिणामस्वरूप सौंदर्यशास्त्र का जन्म होता है। कला शास्त्रों से स्वतंत्र एवं निरपेक्ष होती है। हमारा परिचय कला सिद्धांतों से हो अथवा ना भी हो, तब भी कोई कलाकार नृत्य, गीत, शिल्प इत्यादि कलाओं की रचना कर सकता है। कला अंतरात्मा की अभिव्यक्ति होती है। वह सिद्धांतनिरपेक्ष स्वयंभू होती है। कला खुद एक सत्य है। वह परजीवी निश्चित ही नहीं है।

किसी भी समाज में कला तथा कलाकार का स्थान क्या है, यह प्रश्न भी विचारणीय है। कला जगत का विचार एवं उसकी रचना समाज और संस्कृति के संदर्भ में की जाती है, इस तथ्य को समझना आवश्यक है। मनुष्य का स्वभाव विशेष कला माध्यम से उद्घाटित होता है। यह भी बात स्पष्ट करनी पड़ेगी कि जो तत्व और नियम सामान्य जन पर लागू हैं, क्या वह कलाकार पर भी लागू हैं? क्या कला विषय के चुनाव पर समाज का अंकुश रहना चाहिए? कला का शिक्षा, अर्थव्यवस्था, राजनीति, धर्म इत्यादि से क्या संबंध है, इसका भी विचार करना आवश्यक है। कला-अध्ययन इसके बिना अधूरा रहेगा, यह तो निश्चित है। कला के संबंध में कई प्रश्न हैं। हर नए युग में नए प्रश्न उभरे। अतीत में जो प्रश्न सामने आए, उन्हें शायद नए ढंग से प्रस्तुत किया गया। कला-स्वरूप का ज्ञान हमें आज भी नए संदर्भ में होने की संभावना है।

आज दृष्टा तथा दर्शक को केन्द्र बिंदु मानकर कला पर विचार किया जा रहा है। इसका मतलब यह है कि सौंदर्यशास्त्र का विकास हो रहा है। इसकी फलश्रुति यह है कि अनुकृति का सिद्धांत अपूर्ण माना गया है। 'अनुकरण' के स्थान पर 'कल्पना' शब्द को महत्व प्राप्त हो गया है। अब हमने सिर्फ कलाकृति नहीं, अपितु दर्शकों के सौंदर्य चेतना के विषय में बोलना शुरू कर दिया है। दर्शकों की प्रतिक्रिया और उनका अनुभव हमें महत्वपूर्ण लग रहा है। उसे भी अब प्रेरक शक्ति के रूप में मान्यता मिल चुकी है।

अठारहवीं सदी में 'सुंदर' तथा 'उदात्त' शब्दों का उपयोग हुआ, 'प्रतिभा' शब्द को गंभीरता से लिया गया। इन्हें कला की विशेषता के रूप में लिया गया। इनका विचार शास्त्रीय सौंदर्य चिंतन में हुआ। इस चिंतन को नई दिशा मिली। दर्शकों के विचारों को महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त हुआ। दर्शकों का कलाकृति को लेकर क्या अनुभव रहा है, इस तथ्य को भी गंभीरता से लिया गया। प्रत्यक्ष कला और कला-अनुभव में क्या अंतर है, इस पर बर्क ने विचार किया और 'प्लेज़र' या 'डिलाइट' शब्दों का चयन हुआ। इसके विपरीत 'प्रतिभा' का संबंध दर्शक से न होकर कलाकार से है, इस विचार को स्पष्ट रूप से रखा गया। यह एक नवीन विचार था और इस पर विस्तृत चर्चा हुई।

डॉ. विनोद नारायण इन्दूरकर
अध्यक्ष, सीसीआरटी

संस्कृति और शिक्षा

संस्कृति और शिक्षा एक ही सिक्के के दो पहलू हैं। शिक्षा का सहारा लिए बिना कोई भी संस्कृति फल-फूल नहीं सकती और न ही सांस्कृतिक आधार के बिना कोई भी शिक्षा-व्यवस्था सार्थक हो सकती है। यदि हम अपने आप को स्वस्थ, समृद्ध और बुद्धिमान बनाना चाहते हैं तो आज का समय सांस्कृतिक पुनर्जागरण अथवा पुनरूद्धार की दृष्टि से सर्वथा अनुकूल है। हमारी विरासत एक ऐसा खज़ाना है जो भविष्य में आने वाली हर चुनौती से हमारी रक्षा कर सकता है। सीसीआरटी में हमारा प्रयास होता है संस्कृति को विशिष्ट वर्ग से जनता और फिर आम आदमी यानी वंचित से वंचित तक पहुंचाना। इस उद्देश्य के लिए चलाए जा रहे हमारे नियमित और विशिष्ट कार्यक्रम स्वयंसिद्ध प्रमाण हैं।

श्री ऋषि वशिष्ठ
निदेशक, सीसीआरटी

प्रमुख गतिविधियों की झलकियाँ

नवम्बर 2023 की प्रमुख गतिविधियाँ

06-12 नवंबर 2023 तक सीसीआरटी मुख्यालय, नई दिल्ली में **'स्वच्छ दिवाली शुभ दिवाली'** अभियान मनाया गया। इस क्रम में 10 नवंबर 2023 को एक हस्ताक्षर अभियान शुरू किया गया। दीप प्रज्वलन के साथ सीसीआरटी निदेशक श्री ऋषि वशिष्ठ ने धनतेरस एवं दीपावली पर्व के अवसर पर स्वच्छ एवं शुभ दीपावली पर अपने हस्ताक्षर से शुभकामना संदेश लिखा। इसके बाद सीसीआरटी परिवार के 120 से अधिक अधिकारियों और कर्मचारियों ने हस्ताक्षर किए और इस अभियान में भाग लिया।

प्रशिक्षण / TRAINING

- **कार्यशाला/WORKSHOP**

एनईपी-2020 के अनुरूप 482वां अनुस्थापन पाठ्यक्रम

(20 नवंबर - 09 दिसंबर, 2023 सीसीआरटी क्षेत्रीय केंद्र, गुवाहाटी में)

इस पाठ्यक्रम में 17 राज्यों/केंद्र शासित प्रदेशों - क्रमशः अरुणाचल प्रदेश, असम, चंडीगढ़, छत्तीसगढ़, दिल्ली, गुजरात, हरियाणा, हिमाचल प्रदेश, झारखंड, कर्नाटक, महाराष्ट्र, ओडिशा, राजस्थान, तमिलनाडु, तेलंगाना, उत्तर प्रदेश और पश्चिम बंगाल से कुल 84 शिक्षक (महिला प्रतिभागियों की संख्या- 33) भाग ले रहे हैं।

सीसीआरटी वर्तमान में अपने क्षेत्रीय केंद्र, गुवाहाटी में राष्ट्रीय शिक्षा नीति (एनईपी) 2020 के अनुरूप अपना 482वां अनुस्थापन पाठ्यक्रम आयोजित कर रहा है। 20 दिनों की अवधि में, प्रतिभागी उत्तर पूर्व भारत की समृद्ध चित्र यवनिका (टेपेस्ट्री) पर विशेष जोर देने के साथ सांस्कृतिक पहलुओं की व्यापक खोज में लगे हुए हैं। पाठ्यक्रम का उद्देश्य क्षेत्र में निहित विविध संस्कृतियों, परंपराओं और लोक विरासत की समझ और सराहना को बढ़ावा देना है।

पूरे अनुस्थापन के दौरान उत्तर पूर्व संस्कृति के अनूठे पहलुओं को उजागर करने, इसकी जीवंत परंपराओं और लोक विविधता की समृद्ध टेपेस्ट्री को प्रदर्शित करने पर विशेष ध्यान दिया जा रहा है। प्रतिभागियों को कलात्मक अभिव्यक्तियों, पारंपरिक नृत्यों और स्वदेशी शिल्पों में तल्लीन होने का अवसर मिलता है जो उत्तर पूर्व को एक सांस्कृतिक खजाना बनाते हैं। इंटरैक्टिव सत्र और शिल्प कक्षाएं एनईपी-2020 के समग्र और सांस्कृतिक रूप से संवेदनशील शिक्षा के दृष्टिकोण के अनुरूप, क्षेत्र की विरासत की समझ और सराहना को बढ़ावा देने के लिए डिजाइन की गई हैं।

डॉ. बबली चौधरी के सत्र में प्रतिभागियों को बताया गया कि भारतीय ज्ञान प्रणाली में गहराई से निहित शिक्षा, एक लचीले और सांस्कृतिक रूप से समृद्ध राष्ट्र के निर्माण के लिए आधारशिला के रूप में कैसे कार्य करती है।

अनुस्थापन पाठ्यक्रम के सत्र के दौरान महत्त्वपूर्ण अंत:दृष्टि को आत्मसात करते हुए प्रतिभागीगण।

इस पाठ्यक्रम को विशेष रूप से पारंपरिक प्रचलन के दायरे में व्यावहारिक अनुभवों को शामिल करके सैद्धांतिक चर्चाओं से आगे बढ़ने के लिए डिजाइन किया गया है। विशिष्ट शिल्प कक्षाएं, जिनमें बांस शिल्प जैसी गतिविधियां शामिल हैं, प्रतिभागियों को उत्तर पूर्व संस्कृति और देश के बाकी हिस्सों में गहराई से निहित कलात्मक परंपराओं से जुड़ने के व्यावहारिक अवसर प्रदान करती हैं। बांस शिल्प, जो इस क्षेत्र में अपनी स्थिरता और सांस्कृतिक महत्व के लिए जाना जाता है, प्रतिभागियों के लिए अपने कौशल को निखारने का केंद्र बिंदु बन गया है। ये शिल्प कक्षाएं न केवल कौशल विकास के लिए एक मंच के रूप में काम करती हैं, बल्कि हमारे राष्ट्र की अमूल्य विरासत को संरक्षित और बढ़ावा देने के साधन के रूप में भी काम करती हैं। ऐसे व्यावहारिक तत्वों के एकीकरण ने सीखने के अनुभव को और समृद्ध किया है, जो एक सर्वांगीण और कौशल-उन्मुख शिक्षा को बढ़ावा देने के लिए एनईपी-2020 के व्यापक उद्देश्यों के अनुरूप है। 482वां अनुस्थापन पाठ्यक्रम क्षेत्रीय केंद्र, गुवाहाटी की प्रतिबद्धता का एक प्रमाण है जो सांस्कृतिक रूप से जागरूक और समावेशी शैक्षिक वातावरण तैयार करता है।

स्मृतियों और परंपराओं को गढ़ना – बांस शिल्प की कला में तल्लीन प्रतिभागियों द्वारा क्षेत्र की सांस्कृतिक समृद्धि को प्रतिबिंबित करती कृतियों का सृजन।

श्रीमती भास्वती डेका के सत्र में भारतीय भाषाओं की खूबसूरत विविधता में गाने सीखने का अभ्यास।

छात्रवृत्ति और अध्येतावृत्ति / SCHOLARSHIP AND FELLOWSHIP

वर्ष 2023-24 के लिए सांस्कृतिक प्रतिभा खोज (सीटीएसएस) योजना के तहत छात्रवृत्ति प्रदान करने के साथ-साथ छात्रवृत्ति धारकों के नवीनीकरण के लिए क्षेत्रीय चयन समिति (आरएससी) की बैठक।

- सीसीआरटी ने वर्ष 2023-24 के लिए सांस्कृतिक प्रतिभा खोज (सीटीएसएस) योजना के तहत छात्रवृत्ति प्रदान करने के साथ-साथ छात्रवृत्ति धारकों के नवीनीकरण के लिए क्षेत्रीय चयन समिति (आरएससी) की बैठक 21 नवंबर से 01 दिसंबर 2023 तक सीसीआरटी मुख्यालय परिसर, नई दिल्ली में आयोजित की। इस बैठक में साक्षात्कार/परीक्षण आयोजित करने के लिए विभिन्न क्षेत्रों के कुल 28 विशेषज्ञों को जूरी सदस्य के रूप में आमंत्रित किया गया।

- सीसीआरटी ने वर्ष 2023-24 के लिए सांस्कृतिक प्रतिभा खोज (सीटीएसएस) योजना के तहत छात्रवृत्ति प्रदान करने के साथ-साथ छात्रवृत्ति धारकों के नवीनीकरण के लिए 29-30 नवंबर 2023 को सीसीआरटी क्षेत्रीय केंद्र, उदयपुर में क्षेत्रीय चयन समिति (आरएससी) की बैठक का आयोजन किया। इस बैठक में साक्षात्कार/परीक्षण आयोजित करने के लिए विभिन्न क्षेत्रों के कुल 07 विशेषज्ञों को जूरी सदस्य के रूप में आमंत्रित किया गया।

विस्तार सेवाएँ तथा समुदाय पुनर्निवेश कार्यक्रम/EXTENSION SERVICES AND COMMUNITY FEEDBACK PROGRAMME (ESCFP)

सीसीआरटी मुख्यालय नई दिल्ली:

- 23-25 नवंबर 2023 तक स्कूल ऑफ एक्सीलेंस, द्वारका सेक्टर-22, नई दिल्ली में एक कार्यशाला।
- 23-25 नवंबर 2023 तक स्कूल ऑफ स्पेशलाइज्ड एक्सीलेंस, द्वारका सेक्टर-22, नई दिल्ली में एक कार्यशाला।
- 29 नवंबर 2023 को केंद्रीय विद्यालय, सेक्टर-4, आर.के.पुरम, नई दिल्ली में एक कार्यशाला।

क्षेत्रीय केन्द्र हैदराबाद:

- 01-03 नवंबर 2023 तक गवर्नमेंट गर्ल्स हाई स्कूल, गोशामहल, अंबरपेट, हैदराबाद में एक कार्यशाला।
- 02-04 नवंबर 2023 तक जेड.पी. हाई स्कूल, मल्लापुर, एमडीएल उप्पल, जिला मेडचल-मलकाजगिरी, हैदराबाद में एक कार्यशाला।
- 06-08 नवंबर 2023 तक केंद्रीय विद्यालय, गोलकुंडा, हैदराबाद में एक कार्यशाला।
- 06-08 नवंबर 2023 तक जेड.पी. हाई स्कूल, माचा बोलाराम, एमडीएल उप्पल, अलवाट जिला मेडचल, हैदराबाद में एक कार्यशाला।
- 14-16 नवंबर 2023 तक जेड.पी. हाई स्कूल, कोठागुडा, एमडीएल सेरी लिंगमपल्ली, जिला रंगा रेड्डी, हैदराबाद में एक कार्यशाला।
- 20-22 नवंबर 2023 तक गवर्नमेंट बॉयज हाई स्कूल, जमिस्तानपुर, मणिकेश्वरी नगर, ओ.यू., हैदराबाद में एक कार्यशाला।
- 20-22 नवंबर 2023 तक केंद्रीय विद्यालय, वायु सेना स्टेशन, बेगमपेट, हैदराबाद में एक कार्यशाला।
- 23-25 नवंबर 2023 तक जेड.पी. हाई स्कूल, हब्सीगुडा, जिला मेडचल-मलकजगिरी, हैदराबाद में एक कार्यशाला।
- 23-25 नवंबर 2023 तक जेड.पी. हाई स्कूल, कोंडापुर, जिला रंगा रेड्डी, हैदराबाद में एक कार्यशाला।

क्षेत्रीय केन्द्र उदयपुर:

- 30 अक्टूबर – 01 नवंबर 2023 तक राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय, कानपुर, मादड़ी, उदयपुर में एक कार्यशाला।
- 02-04 नवंबर 2023 तक राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय, बिछड़ी, ब्लॉक कुराबड़ उदयपुर में एक कार्यशाला।
- 2, 3, 6 नवंबर 2023 को राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय, एकलिंगपुर (गिरवा), उदयपुर में एक कार्यशाला।
- 20-22 नवंबर 2023 तक राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय, भूपालपुरा, उदयपुर में एक कार्यशाला।
- 23-25 नवंबर 2023 तक महात्मा गांधी राजकीय स्कूल, पुलकलां, उदयपुर में एक कार्यशाला।

क्षेत्रीय केन्द्र गुवाहाटी:

- 30 अक्टूबर – 01 नवंबर 2023 तक जापोरीगोग हाई स्कूल, जापोरीगोग, असम में एक कार्यशाला।
- 02-04 नवंबर 2023 तक पांडु आदर्श हाई स्कूल, कामरूप जिला, असम में एक कार्यशाला।
- 06-08 नवंबर 2023 तक राजेंद्र नारायण एम.ई. स्कूल, गुवाहाटी, असम में एक कार्यशाला।
- 07-09 नवंबर 2023 तक दखिन बेलटोला एम.ई. स्कूल, कामरूप जिला, असम में एक कार्यशाला।
- 09-11 नवंबर 2023 तक बोंडा आंचलिक हाई स्कूल, कामरूप जिला, असम में एक कार्यशाला।
- 16-18 नवंबर 2023 तक गीतानगर हाई स्कूल, कामरूप जिला, असम में एक कार्यशाला।

क्षेत्रीय केन्द्र दमोह:

- 28-30 नवंबर 2023 तक राजकीय हाई स्कूल, भाटखमरिया, ब्लॉक जबेरा, दमोह में एक कार्यशाला।

नवम्बर, 2023 के महीने में सीसीआरटी के मुख्यालय और उसके चार क्षेत्रीय केंद्रों में कुल 4392 बच्चों को विस्तार सेवाएँ तथा समुदाय पुनर्निवेश कार्यक्रम के तहत प्रशिक्षित किया गया।

पुनश्चर्या पाठ्यक्रम

सीसीआरटी नई दिल्ली में 02–07 नवंबर, 2023 तक एक पुनश्चर्या पाठ्यक्रम 'शिक्षा के लिए एक एकीकृत दृष्टिकोण' आयोजित किया गया। पाठ्यक्रम में 10 राज्यों/केंद्र शासित प्रदेशों के कुल 60 शिक्षक/शिक्षिका प्रतिभागियों ने भाग लिया।

राजभाषा हिन्दी

दिनांक 23 नवंबर 2023 को सीसीआरटी मुख्यालय के मुख्य सभागार (भरतमुनि नाट्यगृह) में हिंदी पखवाड़ा 2023 का पुरस्कार वितरण कार्यक्रम आयोजित किया गया। इस कार्यक्रम में निदेशक सीसीआरटी श्री ऋषि वशिष्ठ ने पुरस्कार विजेताओं को प्रमाणपत्र प्रदान किए। इस पखवाड़े में मुख्यालय और क्षेत्रीय केंद्रों के स्थायी अधिकारियों व कर्मचारियों के साथ-साथ आउटसोर्स स्टाफ प्रतियोगिता विजेताओं को भी पुरस्कार राशि प्रदान की गई।

स्वच्छता कार्य योजना/SWACHHATA ACTION PLAN

सीसीआरटी क्षेत्रीय केंद्र हैदराबाद ने 23–25 नवंबर, 2023 तक स्वच्छ भारत मिशन पर एक कार्यशाला का आयोजन किया। इस कार्यशाला में 159 विद्यार्थियों ने भाग लिया। इस कार्यक्रम के अंतर्गत 24 नवम्बर 2023 को कुल 174 छात्रों/शिक्षकों–शिक्षिकाओं/सीसीआरटी अधिकारियों ने श्रमदान किया और 12 पौधे भी लगाए गए।

'स्वच्छ दिवाली शुभ दिवाली' अभियान के तहत, सीसीआरटी क्षेत्रीय केंद्र, उदयपुर ने 10 नवंबर 2023 को उदयपुर के प्रसिद्ध पर्यटन स्थल सहेलियों की बाड़ी में वोकल फॉर लोकल, एकल उपयोग प्लास्टिक मुक्त, स्वच्छ और हरित दिवाली मनाने के लिए एक हस्ताक्षर अभियान का आयोजन किया, जिसमें बड़ी संख्या में स्थानीय निवासियों, पर्यटकों, विद्यार्थियों आदि ने सक्रिय रूप से हस्ताक्षर कर स्वच्छ दिवाली, शुभ दिवाली मनाने तथा परिवार एवं अन्य लोगों को प्रेरित करने का संकल्प लिया।

13 नवंबर 2023 को इसी अभियान के तहत सीसीआरटी क्षेत्रीय केंद्र के पास स्थित ग्राम हवालाखुर्द, उदयपुर में श्रमदान का आयोजन किया गया। श्रमदान में युवाओं, बुजुर्गों और बच्चों सहित कुल 50 लोगों ने सीसीआरटी कर्मचारियों के साथ मिलकर गांव के विस्तृत क्षेत्र में फैले प्लास्टिक, पटाखों के कचरे और कूड़े को झाड़ू लगाकर एकत्र किया और क्षेत्र को कचरा मुक्त बनाया।

सांस्कृतिक स्रोत एवं प्रशिक्षण केंद्र क्षेत्रीय केंद्र दमोह द्वारा स्वच्छ दिवाली शुभ दिवाली अभियान अंतर्गत दिनांक 09 नवम्बर 2023 को कार्यालय परिसर के सामने स्थित मंदिर प्रांगण में श्रमदान कार्यक्रम आयोजित किया गया। हस्ताक्षर अभियान के माध्यम से आमजनों ने भी अभियान में अपनी भागीदारी निभाई। वहीं सीसीआरटी स्टाफ एवं विशेषज्ञों द्वारा रंगोली बनाकर और दीप जलाकर स्वच्छ दिवाली शुभ दिवाली का संदेश दिया गया। इस दौरान लगभग 50 लोग मौजूद रहे।।

सीसीआरटी में भारत की विविधतापूर्ण सभ्यता-संस्कृति पर केंद्रित विभिन्न विषयों पर गंभीर पुस्तकों का प्रकाशन कराए जाने का एक समृद्ध इतिहास है। ये पुस्तकें न केवल आम पाठकों बल्कि विभिन्न प्रतियोगिता परीक्षाओं की तैयारी में जुटे विद्यार्थियों के लिए भी भारत की सभ्यता-संस्कृति के बारे में प्रामणिक जानकारी का प्रमुख स्रोत हैं।

सीसीआरटी समाचार/CCRT Newsletter के इस अंक के साथ हम संस्था द्वारा प्रकाशित पुस्तकों के बारे में संक्षिप्त जानकारी की एक श्रृंखला शुरू कर रहे हैं। इस क्रम में सर्वप्रथम हम वर्ष 2017 में प्रकाशित पुस्तक 'LIVING TRADITIONS: TRIBAL AND FOLK PAINTINGS OF INDIA' का संक्षिप्त परिचय प्रस्तुत कर रहे हैं। फिलहाल यह पुस्तक केवल अंग्रेजी भाषा में उपलब्ध है। इसे देश के आम पाठक तक सुलभ कराने के लिए इस पुस्तक का अनुवाद नेशनल क्राफ्ट म्यूजियम एण्ड हस्तकला अकेडमी से जुड़े विशेषज्ञ श्री मुश्ताक खान द्वारा पूरा कराया जा चुका है और संस्था द्वारा शीघ्र ही इसका हिंदी संस्करण "जीवंत परंपराएं: भारत की जनजातीय और लोक चित्रकला" के नाम से प्रकाशित कराए जाने की योजना है।

पुस्तक का संक्षिप्त परिचय

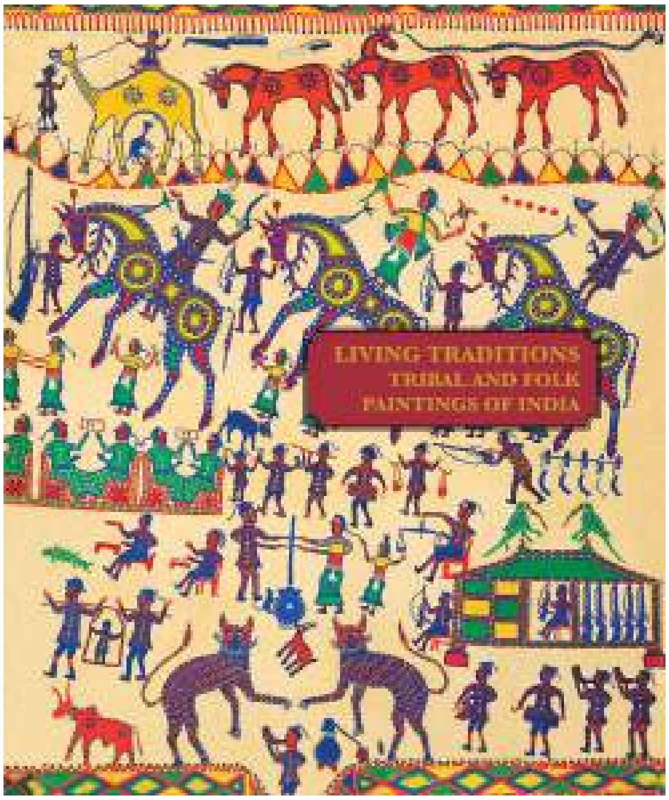

भारत में विविध प्रकार की विलक्षण समृद्ध परम्पराएं है। यह प्रकाशन भारत के जनजातीय, लोकचित्रों के बारे में है एवं आदिवासियों के दैनिक जीवन में उनकी सार्थक भूमिका के बारे में जागरूकता लाने का प्रयास है।

भारतीय जीवन शैली परम्पराओं, अनुष्ठानों, प्रथाओं, विश्वासों एवं देवी-देवताओं की विस्तृत दृश्यावली से परिपूर्ण है जिसने भारत के विभिन्न अंचलों में फैली समृद्ध एवं विविधतापूर्ण आदिवासी एवं लोक चित्रकला को जन्म दिया है। एक चित्र की व्युत्पत्ति धार्मिक स्रोत अथवा पुरातन लोक विचार से हो सकती है। प्रत्येक कलारूप की अपनी आभा और विशिष्टता होती है जो उसे औरों से अलग एक विशेष पहचान देती है। ये चित्र समुदायों के दैनिक जीवन को तो समृद्ध करते ही हैं साथ ही आस-पड़ोस के साथ उनके सहज संबंध को भी प्रतिबिंबित करते हैं।

प्रत्येक चित्र–परम्परा अपने आंचलिक सौन्दर्य, सांस्कृतिक एवं आध्यात्मिक संवेदनाओं को दर्शाती है। इनके सांस्कृतिक प्रस्तुतीकरण, परम्परा, आधारभूत सामग्री, तकनीक एवं उनके प्रयोग में अत्यधिक विविधता देखने को मिलती है जो भारत के विभिन्न अंचलों एवं जिलों का प्रतिनिधित्व करती है। इन चित्रकारियों की विषयवस्तु प्रकृति, आध्यात्मिकता, स्थानीय लोकज्ञान तथा दंतकथाओं से संबंधित है।

ये चित्रकारियाँ जन समुदायों के दैनिक जीवन को समृद्ध तथा उत्साही कलाकारों को जीविकोपार्जन का साधन प्रदान करती हैं। जन्म-मृत्यु, शादी-विवाह, किशोरावस्था, फसल–कटाई एवं मानसून का आगमन, पूर्णिमा, अमावस्या तथा देवी-देवता इन चित्रकारियों की विषयवस्तु हैं जो इन जीवन्त परम्पराओं को साकार करने में योगदान करती हैं। मानव समाज एवं सुख-दुःख के अवसर इन सृजनात्मक अभिव्यक्तियों के मध्य में प्रकाश पुंज की तरह अंतर्निहित हैं।

ये चित्रकारियां उन सामान्य लोगों की सृजनशीलता का प्रतीक हैं जिन्होंने इस क्षेत्र में कोई औपचारिक प्रशिक्षण प्राप्त नहीं किया है। यह उनके कौशल–प्रदर्शन एवं आत्म-अभिव्यक्ति का एक सशक्त माध्यम है। प्रत्येक कला–शैली का अपना समय और अलग पहचान होती है जो उसे औरों से अलग करती है।

भित्तिचित्र दैनिक अनुष्ठानों का अंग हैं तथा स्थानीय नायकों के यशोगान अथवा उनकी कहानियाँ दर्शाने का एक माध्यम। ये चित्र घर एवं कमरों की दीवारों की सुसज्जित करते हैं। संक्षेप में कह सकते हैं कि ये घर के बाहरी एवं भीतरी स्थानों की सुन्दरता में चार चांद लगाते हैं।

आज भी भारत के गांवों में हर कोई इस तरह की जनजातीय चित्रकारी में भागीदारी करता है और इस तरह प्रत्येक व्यक्ति कलाकार है।

सांस्कृतिक स्रोत एवं प्रशिक्षण केन्द्र (सीसीआरटी) की स्थापना मई, 1979 में श्रीमती कमलादेवी चट्टोपाध्याय तथा डॉ. कपिला वात्स्यायन के मार्गदर्शन में की गई। सीसीआरटी संस्कृति मंत्रालय, भारत सरकार के प्रशासनिक नियंत्रण के अधीन एक स्वायत्तशासी संस्थान के रूप में कार्यरत है। यह एक अग्रणी संस्थान है, जो शिक्षा को संस्कृति के साथ जोड़ने का कार्य कर रहा है। सीसीआरटी देशभर के सेवारत शिक्षकों, शिक्षाविदों तथा प्रशासकों के लिए उनकी रचनात्मक प्रतिभा का विकास करने हेतु विभिन्न प्रशिक्षण कार्यक्रमों का आयोजन करता है। सीसीआरटी दिव्यांग बच्चों के लिए भी विशेष प्रशिक्षण कार्यक्रमों का आयोजन करता है। प्रशिक्षण कार्यक्रमों के अंतर्गत विभिन्न गतिविधियों के अतिरिक्त दृश्य-श्रव्य सामग्री द्वारा पाठ्यक्रम-शिक्षण में सांस्कृतिक तत्वों के सन्निवेश के लिए प्रविधि-प्रतिपादन पर विशेष बल दिए जाने के साथ-साथ भारतीय संस्कृति में निहित दर्शन, सौंदर्यशीलता की समझ व बोध भी विकसित किया जाता है। प्रशिक्षण कार्यक्रमों में प्रतिभागियों को विविध कला शैलियों से परिचित कराने के साथ-साथ उनमें निहित समग्र कौशल को विस्तार देने एवम् उनकी कमी को दूर कर उन्हें सक्षम बनाने हेतु बल दिया जाता है।

सीसीआरटी का मुख्यालय नई दिल्ली में है। इसके चार क्षेत्रीय केन्द्र हैं, जो भारतीय कला तथा संस्कृति में व्यापक प्रचार-प्रसार हेतु पश्चिम में उदयपुर, दक्षिण में हैदराबाद, पूर्वोत्तर में गुवाहाटी तथा मध्य में दमोह में स्थित हैं।

सीसीआरटी मुख्यालय, नई दिल्ली:	सीसीआरटी क्षेत्रीय केंद्र:
डॉ. विनोद नारायण इंदूरकर, माननीय अध्यक्ष, सीसीआरटी संस्कृति मंत्रालय, भारत सरकार, नई दिल्ली **श्री ऋषि वशिष्ठ**, निदेशक, सीसीआरटी संस्कृति मंत्रालय, भारत सरकार, नई दिल्ली **डॉ. राहुल कुमार**, उप निदेशक, (प्रशिक्षण) **श्री राजेश भटनागर**, उप निदेशक (वित्त) **डॉ. संदीप शर्मा**, उपनिदेशक, (मूल्यांकन) **श्री दिबाकर दास**, उप निदेशक, (छात्रवृत्ति एवं अध्येतावृत्ति) **श्री एस.के.एल. गणेश**, उपनिदेशक (प्रशासन) **श्री मनीष कुमार**, हिन्दी अधिकारी	**श्री वाई. चन्द्र शेखर**, परामर्शक सीसीआरटी क्षेत्रीय केंद्र, हैदराबाद, तेलंगाना **श्री ओम प्रकाश शर्मा**, परामर्शक सीसीआरटी क्षेत्रीय केंद्र, उदयपुर, राजस्थान **श्री निरंजन भुइयां**, परामर्शक सीसीआरटी क्षेत्रीय केंद्र, गुवाहाटी, असम **श्री एस.के.एल. गणेश**, उप. निदेशक (प्रशासन) एवं प्रभारी सीसीआरटी क्षेत्रीय केंद्र, दमोह

सांस्कृतिक स्रोत एवं प्रशिक्षण केन्द्र

(संस्कृति मंत्रालय, भारत सरकार के अंतर्गत एक स्वायत संस्थान)

15ए, सेक्टर-7, द्वारका, नई दिल्ली - 110075 भारत

दूरभाष : 011-25309300 ई-मेल : dir.ccrt@nic.in वेबसाइट : www.ccrtindia.gov.in

क्षेत्रीय केन्द्र
सांस्कृतिक स्रोत एवं प्रशिक्षण केन्द्र
1-118/सीसीआरटी, सर्वे नं. 64
(गूगल ऑफिस के निकट),
मधापुर, हैदराबाद, तेलंगाना
पिन कोड:- 500 084
दूरभाष: +91+040+23111910/23117050
ई-मेल: rchyd.ccrt@nic.in

क्षेत्रीय केन्द्र
सांस्कृतिक स्रोत एवं प्रशिक्षण केन्द्र
58, जुरीपार, पंजाबारी रोड
गुवाहाटी, असम
पिन कोड: 781037
दूरभाष: +91-0361-2335317
ई-मेल: rcgwt.ccrt@nic.in

क्षेत्रीय केन्द्र
सांस्कृतिक स्रोत एवं प्रशिक्षण केन्द्र
हवाला खुर्द, बड़गाँव,
उदयपुर, राजस्थान
पिन कोड: 313011
दूरभाष: +91+0294-2430764
ई-मेल: rcud.ccrt@nic.in

क्षेत्रीय केन्द्र
सांस्कृतिक स्रोत एवं प्रशिक्षण केन्द्र
पुरानी कलेक्ट्रेट बिल्डिंग,
दमोह, मध्य प्रदेश
पिन कोड:- 470661
ई-मेल: rcdamoh-ccrt@gov.in

@CCRTDelhi @ccrtofficialchannel ccrtnewdelhi @CCRTNewDelhi @ccrtofficial

संरक्षक: **डॉ. विनोद नारायण इंदूरकर**, अध्यक्ष, सीसीआरटी *मार्गदर्शक:* **श्री ऋषि वशिष्ठ**, निदेशक, सीसीआरटी
संपादक: **मनीष कुमार**, हिंदी अधिकारी *प्रकाशन सहयोग:* **श्री रमनीक कुमार**, प्रकाशन सहायक एवं **श्री विरेन्द्र कुमार**, ग्राफ़िक डिज़ाइनर